

भारतीय संस्कृति सर्वस्वम्
गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा संस्कृत मे
रचित

हनुमान चालीसा और संकट मोचन
हनुमानाष्टक अवधी भाषांतरण
प्रकाशन : रामायणम् प्रिंटिंग प्रेसम्
प्रकाशक :-राघवेन्द्र शुक्ल

संवत् विक्रमी 1958 लवपुरी (लाहौर), 1/2
अनारकली बाजार लवपुरी

॥ प्रारंभिक दोहा ॥

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुर
सुधारि।

बरनऊँ रघुवर विमल जसु, जो दायकु फल
चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस
विकार॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।

जय कपीस तिहुँलोक उजागर॥

रामदूत अतुलित बल धामा।

अंजनि पुत्र पवनसुत नामा॥

महावीर विक्रम बजरंगी।

कुमति निवार सुमति के संगी॥

कंचन वरन विराज सुवेसा।

कानन कुण्डल कुंचित केसा॥

हाथ वज्र औ ध्वजा बिराजै।

काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
शंकर स्वयं केसरी नंदन*।
तेज प्रताप महा जग वंदन॥
विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिवे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया।
राम लखन सीता मन वसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहि देखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचंद्र के काज सँवारे॥
लाय सजीवन लखन जियाये।
श्री रघुवीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस वदन तुम्हरो जस गावै।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।

नारद सारद सहित अहीसा ॥
यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥
युग सहस्रत्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही।
जलधि लाँघि गये अचरज नाही ॥
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा विन पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपे।

तीनो लोक हाँक ते काँपे॥
भूत पिशाच निकट नहि आवै।
महावीर जब नाम सुनावै॥
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥
संकट ते हनुमान छुडावै।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥
सबपर राम राज सिर ताजा**।
तिन के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै॥
चारो युग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकन्दन राम दुलारे॥
अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता।
अस वर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा।

सादर रहो रघुपति के दासा***॥

तुम्हारे भजन राम को भावै।

जनम जनम के दुख विसरावै॥

अंतकाल रघुवरपुर जाई।

जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई॥

और देवता चित न धरई।

हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥

संकट कटै मिटै सब पीरा।

जो सुमिरै हनुमत बलवीरा॥

जै जै जै हनुमान गोसाई।

कृपा करहु गुरुदेव की नाई॥

यह शत बार पाठ कर जोई****।

छूटहि बन्दि महा सुख होई॥

जो यह पढै हनुमान चालीसा।

होय सिद्धि साखी गौरीसा॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा।

कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक
भयो अँधियारो।

ताहि सो त्रास भयो जग को यह सङ्कट काहु
सो जात न टारो॥

देवन आनि करी विनती तब छाँडि दियो रवि
कष्ट निवारो।

को नाहि जानत है जग मे॥

कपि सङ्कट मोचन नाम तिहारो।

वालि की त्रास कपीस वसै गिरि जात महाप्रभु
पंथ निहारो॥

चौकि महा मुनि श्राप दियो तब चाहिय कौन
विचार विचारो।

कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के
शोक निवारो॥

अंगद के सङ्ग लेन गये सिय खोज कपीस यह
बैन उचारो।

जीवत ना बचिहौ हमसो जु बिना सुधि लाए
इहाँ पगु धारो॥

हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि
प्राण उबारो।

रावण त्रास दई सियको सब राक्षसि सो कहि
शोक निवारो॥

ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा
रजनीचर मारो।

चाहत सीय अशोक सो आगि सु दै प्रभु मुद्रिका
शोक निवारो॥

बाण लग्यो उर लछिमन के तब प्राण तजे
रावण***** मारो।

दै वचन वैद्य सुषेण तबै गिरि द्रोण सुवीर
उपारो॥

आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम
प्राण उबारो।

मेघनाथ***** युद्ध अजान कियो तब नाग
कि फाँस सबै सिर डारो॥

श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट
भारो।

आनि खगेस तबै हनुमान जु बन्धन काटि
सुत्रास निवारो॥

बंधु समेत जबै अहिरावण लै रघुनाथ पताल
सिधारो।

देविहि पूजि भली विधि सौ बलि देऊँ सबै मिलि
मन्त्र विचारो॥

जाय सहाय भयो तब ही अहिरावण सैन्य
समेत संहारो।

काज कियो बड़ देवन के तुम वीर र महाप्रभु
देखि विचारो॥

कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसे नहि
जात है टारो।

वेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कुछ संकट होय
हमारो॥

दोहा

लाल देह लाली लसे अरु धरि लाल लंगूर।

वज्र देह दानवदलन जय जय जय कपिसूर॥

टिप्पणियां

शंकर सुवन केशरी नंदन।

तेज प्रताप महा जग वंदन॥

टिप्पणी - हनुमान जी शंकर जी के पुत्र नहीं बल्कि स्वयं शंकर जी ही हनुमान जी थे।

सब पर राम तपस्वी राजा।

जिनके काज सकल तुम साजा॥

टिप्पणी - जब भरत ने राम जी से कहा था कि आप तपस्वी होकर ही अयोध्या की सीमा में ही रहे और दोनों कर्तव्य निभाएं। तब राम जी ने स्वयं कहा कि जो तपस्वी होते हैं वो राजा नहीं हो सकते हैं। जैसे तुलसीदास जी ने स्वयं रामचरितमानस में लिखा है -

"निज नगर ससुरारी सम जानी।

रहु तात बनवास निभानी॥

राजकाज मोहि सौं तजि दीन्हा।

सचिव प्रजा सब करहुँ सजीन्हा।।
तुम तपसी बन नगर बसौ।
राजकाजु हमरे सौं नसौ।"

"तात! तपस्वी जे बन जाहीं।
राज धरम तिन्ह के न साहीं।।
जौं धरमु राखौं बनवासा।
नहिं धरइ सकौं राज पासा।।
राजा बनि तपसी धरमु त्यागौं।
तुलसी कथमि नीति अनुरागौं।।"(अयोध्या
काण्ड चौपाई 256-57

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।
जो शत बार पाठ कर कोई।
छुटहि बंदि महा सुख होई।।
लै गृह वैद्य सुषेण समेत, गिरि द्रोण सुवीर
उपारो।

श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट
भारो।

आनि खगेस तबै हनुमान जु बन्धन काटि
सुत्रास निवारो।

टिप्पणी -

जबकि मूल प्रति ऐसा नहीं लिखा है उसमें
लिखा है कि सुषेण वैद्य सुग्रीव के राज वैद्य
थे और मेघनाथ ने नागास्त्र चलाया था। जैसे
रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने
स्वयं कहा है -

सुग्रीव बोले विनय सनेही।
लछिमन मूर्छित भए कठिन देही॥
रावन प्रेषित शक्ति घात।
उर पर लागी बिप्रबुद्ध बात॥

हमरे राज वैद्य सुषेण नामा।
औषध जानत बिद्या ग्रामा॥
जौं प्रभु आज्ञा करिहहु पावा।

तेहि पथ जीवन हेतु उपावा।।(लंका काण्ड
चौपाई 80-81)

यह सब

रॉबर्ट सैंडमेन को बलूचिस्तान के हिंगलाज
माता मंदिर से प्राप्त हुई थी जिसे वह वहां से
इंग्लैंड लेकर गया।

जिसे मेरे पिताजी स्वर्गीय श्री राजेन्द्र शुक्ला
जी ने स्वयं पढ़ा था जिसे तुलसीदास जी ने
संस्कृत में लिखा था और उसमें उनकी
वंशावली भी दी थी जिसे स्वयं तुलसीदास जी
ने लिखा है ,क्योंकि वह उस समय उसी मंदिर
के उच्च पुजारी थे।

—निष्कर्ष - जिन तुलसीदास जी ने एक ही चौपाई में सूर्य से पृथ्वी की दूरी बताई हो वहां गलत कैसे लिख सकते हैं। यह सभी प्रकाशकों की गलतियां हैं जो उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया।